दिनांक : 28 फरवरी, 2014

अपना विस्तार करता एनडीए

अरुण जेटली
राज्य सभा में विपक्ष के नेता

श्री रामविलास पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी ने भाजपा का सहयोगी और एनडीए का हिस्सा बनने का फैसला किया। साथ ही बड़ी संख्या में राजनेता, प्रबुद्ध नागरिक और राजनैतिक समूह पार्टी में शामिल होकर अथवा एनडीए के साथ गठजोड़ कायम करके भाजपा को अपना समर्थन दे रहे हैं। भाजपा/एनडीए और नरेन्द्र मोदी के समर्थन में जनमत का अचानक जुड़ाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

जब कुछ राजनैतिक गुट खुद की पहचान एनडीए के साथ करते हैं तो हो सकता है कि उनके प्रभाव का क्षेत्र उस विशेष राज्य तक सीमित रह जाता हो। लेकिन उसके शामिल हो जाने से बड़ा राजनैतिक संकेत जाता है। भाजपा ने जब श्री नरेन्द्र मोदी को अपना प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया था तब मीडिया के कुछ मित्रों और राजनैतिक पर्यवेक्षकों की पहली प्रतिक्रिया थी कि अब पार्टी के लिए सहयोगी ढूंढना बहुत मुश्किल काम हो जाएगा। उनका मानना था कि पार्टी राजनैतिक दृष्टि से अलग–थलग पड़ जाएगी। जब जनमत जुड़ने लगता है, कोई भी पार्टी 'बहुत बढ़िया तरीके से एकांत' में भी रह सकती है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। एक कमजोर भाजपा की तुलना में एक मजबूत भाजपा में यह क्षमता है कि वह अधिक मित्रों और सहयोगियों को आकर्षित कर सके। भाजपा की रैलियों में लोगों का भारी समर्थन बदलाव का संकेत है। यह स्पष्ट संदेश है कि हवा का रुख किस तरफ है। आज गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों में जो लोग भाजपा को छोड़कर चले गए थे वह वापस आ गए हैं और उन्होंने पार्टी की ताकत को बढ़ाया है। पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार और तमिलनाडु जैसे राज्यों में हमारे महत्वपूर्ण सहयोगी हैं। ऐसे अनेक राज्य हैं जहां चुनाव से पहले चुनावी गठजोड़ या चुनाव के बाद राजनैतिक गठजोड़ कायम होने की संभावना है।

मेरा हमेशा से मानना है कि एक मजबूत भाजपा एक मजबूत एनडीए की तरफ बढ़ेगी। एनडीए को कैसे मजबूत किया जाएगा इसके लिए अटलजी की पुस्तक का एक पाठ पढ़ना जरुरी है। 1996 में तीन दलों का एनडीए 1998 में 24 दलों का एनडीए बन गया। क्षेत्रीय सहयोगियों को आकर्षित करने के लिए किसी को भी भारत के संघीय और विविध चरित्र को समझना होगा। आज लोकप्रिय समर्थन, सहयोगियों की बढ़ती संख्या और बढ़ते गठबंधन के सामाजिक चरित्र के संयोजन का महत्व है। ये सभी चीजें नये बदलाव का संकेत देती हैं।

*****